

# कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र

## कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स

### फरवरी 1848

#### मुखपृष्ठ

युरोप को एक भूत आतंकित कर रहा है—कम्युनिज़्म का भूत। इस भूत को भगाने के लिए पोप और ज़ार, मेटर्निख (Metternich) और गीज़ो (Guizot), फ़्रांसीसी उग्रवादी और जर्मन पुलिस के भेदिये—बूढ़े यूरोप के सारे सत्ताधारी एक हो गए हैं।

कौन-सी ऐसी विरोधी पार्टी है, जिसे उसके सत्तारूढ़ विरोधियों ने कम्युनिस्ट कहकर कोसा न हो? कौन-सी ऐसी विरोधी पार्टी है, जिसने कम्युनिज़्म के कलंकपूर्ण लांछन को उलटे अपने से अधिक आगे बढ़ी हुई विरोधी पार्टियों और अपने प्रतिक्रियावादी विरोधियों पर भी न लगाया हो?

इस तथ्य से दो बातें निकलती हैं :

१. यूरोप के सभी सत्ताधारियों ने स्वीकार कर भी लिया है कि कम्युनिज़्म स्वयं एक शक्ति है।

२. समय आ गया है कि कम्युनिस्ट खुलेआम तमाम दुनिया के सामने अपने विचारों, उद्देश्यों और अपनी प्रवृत्तियों को प्रकट करें और स्वयं पार्टी के घोषापत्र के जरिये कम्युनिज़म के भूत की इस नानी की कहानी का खंडन कर दें।

इसी उद्देश्य से विभिन्न जातियों के कम्युनिस्ट लंदन में जमा हुए हैं और उन्होंने निम्नलिखित 'घोषणापत्र' तैयार किया है, जो अंग्रेज़ी, फ्रांसीसी, जर्मन, इतालवी, फ़्लेमिश और डेनिश भाषाओं में प्रकाशित किया जायेगा।

### १. बुर्जुआ और सर्वहारा\*

आज तक अस्तित्वमान समस्त समाज का इतिहास<sup>(२)</sup> वर्ग संगर्षों का इतिहास है।

स्वतंत्र नगरिक और दास, पैट्रीशियन (patrician) और प्लेबियन (plebeian), सामंत और भूदास, गिल्ड-मास्टर<sup>(३)</sup> और कमेरा — संक्षेप में उत्पीड़क और उत्पीड़ित एक दूसरे का अविरत विरोध करते, निरंतर कभी छिपी, तो कभी प्रकट लड़ाई लड़ते आये हैं, ऐसी लड़ाई, जिसका अंत हर बार या तो पूरे समाज के क्रांतिकारी पुनर्गठन में, या संघर्षरत वर्गों आम बरबादी में हुआ है।

इतिहास के पूर्ववर्ती युगों में हम प्रायः हर जगह विभिन्न सामाजिक क्षेत्रों में विभाजित समाज का एक पेचीदा ढांच — सामाजिक क्षेत्रों

का नानारूप सोपान पाते हैं। प्राचीन रोम में पैट्रीशियन (patricians), नाइट (knights), प्लेबियन (plebeians) और दास मिलते हैं; मध्ययुग में सामंत अधीनस्थ जागीरदार, गिल्ड-मास्टर, कमेरे, भूदास दिखाई देते हैं; और लगभग इन सभी वर्गों में फिर गौण सोपान हैं।

आधुनिक बुर्जुआ समाज ने, जो सामंती समाज के ध्वंसावशेष से उपजा है, वर्ग विरोधों को खत्म नहीं कर दिया है। उसने बस पुराने के स्थान पर नये वर्गों, पुरानी के स्थान पर उत्पीड़न की नयी अवस्थाओं और पुराने के स्थान पर संघर्ष के नये रूपों को ही स्थापित किया है।

तथापि, दूसरे युगों की तुलना में हमारे युग का, बुर्जुआ युग का, विशिष्ट लक्षण यह है कि इसने वर्ग विरोधों को सरल बना दिया है। समूचे तौर पर समाज दो विशाल शत्रु शिविरों में, एक दूसरे के खिलाफ खड़े दो विशाल वर्गों—बुर्जुआ और सर्वहारा—में अधिकाधिक विखंडित होता जा रहा है।

मध्ययुग के भूदासों से प्रारंभिक नगरों के अधिकारपत्र प्राप्त बर्गर पैदा हुए। इन्हीं बर्गरों (burghers) से आगे चलकर बुर्जुआ के पहले तत्वों का विकास हुआ।

अमरीका की खोज और आशा अंतरीप होकर समुद्री रास्ते के निकाले जाने ने उदीयमान बुर्जुआ के लिए नया क्षेत्र उन्मुक्त कर दिया। ईस्ट इंडियन और चीनी बाज़ारों, अमरीका के उपनिवेशन, उपनिवेशों के साथ व्यापार, विनिमय-साथनों और सामान्यतया जिंसों में वृद्धि ने वाणिज्य, नौपरिवहन

और उद्योग को अभूतपूर्व आवेग और, फलस्वरूप, लड़खड़ाते हुए सामंती समाज में क्रांतिकारी तत्व को तिव्र विकास का अवसर प्रदान किया।

उद्योग की सामंती प्रणाली, जिसमें औद्योगिक उत्पादन पर संवृत गिल्डों का एकाधिकार था, अब नये बाज़ारों की बढ़ती हुई ज़रूरतों की पूर्ति के लिए काफ़ी नहीं रह गयी। उसकी जगह मैनुफ़ैक्चर ने ले ली। गिल्ड-मास्टर्स को मैनुफ़ैक्चरिंग मध्यवर्ग ने एक ओर धकेल दिया। अलग-अलग समाहारी गिल्डों के बीच श्रम-विभाजन हर अकेली कार्यशाला के श्रम-विभाजन के आगे लुप्त हो गया।

इस बीच बाज़ार बराबर बढ़ते गये और मांग बराबर चढ़ती गयी। ऐसी दशा में मैनुफ़ैक्चर भी नाकाफ़ी सिद्ध होने लगा। तब भाप और मशीन औद्योगिक उत्पादन में क्रांति कर दी। मैनुफ़ैक्चर का स्थान बड़े पैमाने के आधुनिक उद्योग ने और औद्योगिक मध्यवर्ग का स्थान औद्योगिक लखपतियों ने, पूरी की पूरी औद्योगिक सेनाओं के नायकों ने, औधुनिक बुर्जुआओं ने ले लिया।

आधुनिक उद्योग ने विश्व बाज़ार की स्थापना की है, जिसके लिए अमरीका की खोज ने पथ प्रशस्त किया था। इस बाज़ार ने वाणिज्य, नौपरिवहन और स्थल संचार का ज़बरदस्त विकास कर दिया है। अपनी बारी में इस विकास ने उद्योग के विस्तरण पर प्रभाव डाला; और जिस अनुपात में उद्योग, वाणिज्य, नौपरिवहन और रेलों का प्रसार हुआ, उसी अनुपात में बुर्जुआ वर्ग का विकास हुआ, उसने अपनी पूंजी को बढ़ाया और मध्ययुग से चले आते प्रत्येक वर्ग को पृष्ठभूमि में धकेल दिया।

चुनांचे, हम देखते हैं कि आधुनिक बुर्जुआ वर्ग स्वयं किस तरह विकास की एक लंबी प्रक्रिया की, उत्पादन तथा विनिमय विधियों में क्रांतियों के एक पूरे सिलसिले की उपज है।

बुर्जुआ वर्ग के विकास के हर पग के साथ उस वर्ग की तदनुरूप राजनीतिक उन्नति हुई। सामंती अभिजातों के प्रभुत्व काल में एक उत्पीड़ित वर्ग, तो मध्ययुगीन कम्यून में एक सशस्त्र और स्वशासी साहचर्य; यहां (जैसे इटली और जर्मनी में) स्वतंत्र नगर गणराज्य, तो वहां (जैसे फ्रांस में) राजतंत्र की करदेय "तीसरी क्षेणी", आगे चलकर मैनुफैक्चर के ज़माने में, अभिजात वर्ग के खिलाफ़ अर्धसामंती अथवा निरंकुश राजतंत्र के लिए प्रतिसंतुलक का और, वास्तव में, आम तौर पर शक्तिशाली राजतंत्रों की आधारशिला का काम करने के बाद बुर्जुआ वर्ग ने अंततः आधुनिक उद्योग और विश्व बाज़ार की स्थापना के बाद से आधुनिक प्रातिनिधिक राज्य में अपने लिए अनन्य राजनीतिक प्रभुत्व जित लिया है। आधुनिक राज्य की कार्यपालिका पूरे बुर्जुआ वर्ग के सामान्य मामलों का संचालन करनेवाली समिति के अलावा और कुछ नहीं है।

बुर्जुआ वर्ग ने इतिहास में बहुत ही क्रांतिकारी भूमिका अदा की है।

बुर्जुआ वर्ग ने, जहां भी उसका पलड़ा भारी हुआ है, सभी सामंती, पितृसत्तात्मक, "सौम्य" संबंधों का अंत कर दिया है। उसने मनुष्य को अपने "स्वाभाविक क्षेष्टों" के साथ बांध रखनेवाले नाना प्रकार के सामंती संबंधों की निर्ममतापूर्वक धाज्जियां उड़ा दी है और नग्न आत्मस्वार्थ के, "नक्रद पैसे-

कौड़ी” के हृदयशून्य व्यवहार के सिवा मनुष्यों के बीच और कोई दूसरा संबंध बाकी नहीं रहने दिया है। धार्मिक क्षुब्धता के स्वर्गोपम आनंदातिरेक को, विरोचित उत्साह और कूपमंडूकतापूर्ण भावुकता को उसने स्वार्थमय हिसाब-किताब के बर्फीले पानी में डुबा दिया है। मनुष्य के वैयक्तिक मूल्य को उसने विनिमय-मूल्य में परिणत कर दिया है और अनगिनत अलोप्य प्रदत्त तथा अर्जित स्वाधीनताओं की जगह उस एक अनैतिक स्वाधीनता की स्थापना की है, जिसे मुक्त व्यापार कहते हैं। एक शब्द में, धार्मिक और राजनीतिक भ्रान्तियों के आवरण के पीछे छिपे शोषण के स्थान पर उसने नग्न, निर्लज्ज, प्रत्यक्ष और पाशविक शोषण की स्थापना की है।

जिन पेशों के संबंध में अब तक लोगों के मन में आदर और श्रद्धा की भावना थी, उन सभी का प्रभामंडल बुर्जुआ वर्ग ने छीन लिया है। डाक्टर, वकील, पुरोहित, कवि और वैज्ञानिक, सभी को उसने अपने वेतनभोगी उजरती मज़दूर बना लिया है।

बुर्जुआ वर्ग ने परिवार के ऊपर से भावुकता के परदे को उतार फेंका है और पारिवारिक संबंध को मात्र एक धन-संबंध में बदल दिया है।

बुर्जुआ वर्ग ने यह प्रकट कर दिया है कि यह क्योंकर हुआ कि मध्य-युग में जीवनशक्ति के उस बर्बर प्रदर्शन ने, जिसकी प्रतिक्रियावादी लोग इतनी तारीफ़ करते हैं, अपना स्वाभाविक अनुपूरक अकर्मण्यता और आलस्य में ही पाया। उसने सबसे पहले दिखलाया कि मानव की क्रियाशक्ति क्या कुछ कर सकती है। उसने ऐसे चमत्कारों का सर्जन किया है, जो मिस्र के

पिरामिडों, रोम की जल-प्रणाली और गोथिक गिरजाघरों से कहीं अधिक आश्चर्यजनक हैं; उसने ऐसे-ऐसे अभियानों का आयोजन किया है, जिनके आगे समस्त पूर्ववर्ति जातियों के निष्क्रमण और धर्मयुद्ध फीके पड़ जाते हैं।

उत्पादन उपकरणों में और, फलतः, उत्पादन संबंधों में और उनके साथ समाज के समस्त संबंधों में लगातार क्रांति लाये बिना बुर्जुआ वर्ग जीवित नहीं रह सकता। इसके विपरीत, सभी पूर्वगामी औद्योगिक वर्गों के अस्तित्व की पहली शर्त पुरानी उत्पादन विधियों को ज्यों का त्यों बनाये रखना थी। उत्पादन का निरंतर क्रांतिकरण, सभी सामाजिक अवस्थाओं में लगातार उथल-पुथल, चिरंतन अनिश्चितता और हलचल—ये चिज़ें बुर्जुआ युग को सभी पूर्ववर्ति युगों से अलग करती है। सभी स्थिर और जड़ीभूत संबंध अपने सहगामी प्राचीन तथा पूज्य पूर्वग्रहों और मतों सहित ध्वस्त हो जाते हैं, और सभी नवनिर्मित संबंध जड़ीभूत होने के पहले ही पुराने पड़ जाते हैं। जो कुछ भी ठोस है, वह हवा में उड़ जाता है, जो कुछ पावन है, वह भ्रष्ट हो जाता है, और मनुष्य को आखिरकार संजीदा नज़र से जीवन की वास्तविक हालतों को और मानव के परस्पर संबंधों को देखने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

अपने उत्पादों के लिए निरंतर विस्तारमान बाज़ार की ज़रूरत बुर्जुआओं का दुनिया भर में पीछा करती है। उसे हर जगह घुसना, हर जगह पैर जमाना, हर जगह संपर्क क्रायम करना होता है।

विश्व बाज़ार का अपने लाभ के लिए इस्तेमाल कर बुर्जुआ वर्ग ने उत्पादन और उपभोग को हर देश में सार्वभौमिक स्वरूप दे दिया है।

प्रतिक्रियावादियों को अत्यंत उद्विग्न करते हुए उसने उद्योग के पैरों के निचे से उस राष्ट्रीय आधार को खींच लिया है, जिस पर वह खड़ा था। पुराने जमे-जमाये सभी राष्ट्रीय उद्योग या तो नष्ट कर दिये गये हैं या हर रोज़ नष्ट किये जा रहे हैं। उनका स्थान नये उद्योग ले रहे हैं, जिनका समारंभ सभी सभ्य राष्ट्रों के लिए जीवन-मरण का प्रश्न बन जाता है, ऐसे उद्योग, जो अब देशज कच्चे माल का नहीं, बल्कि दूरतम क्षेत्रों से लाये कच्चे माल का उपयोग करते हैं; ऐसे उद्योग, जिनके उत्पादों का उपभोग सिर्फ़ स्वदेश में ही नहीं, बल्कि पृथ्वी के हर कोने में किया जाता है। पुरानी आवश्यकताओं की जगह, जो स्वदेशी चीज़ों से तुष्ट हो जाती थीं, अब नयी आवश्यकताएं पैदा हो गयी हैं, जिनकी तुष्टि के लिए दूर देशों और भूभागों के उत्पादों की ज़रूरत होती है। पुरानी स्थानीय और राष्ट्रीय पृथकता और आत्मनिर्भरता का स्थान चौतरफ़ा संसर्ग ने, राष्ट्रों को सार्वभौम परस्पर-निर्भरता ने ले लिया है। और भौतिक उत्पादन की ही तरह बौद्धिक उत्पादन के क्षेत्र में भी समान रूप से यही बात है। अलग-अलग राष्ट्रों की बौद्धिक कृतियां सामान्य संपत्ति बन गयी हैं। राष्ट्रीय एकांगिता और संकीर्णता अधिकाधिक असंभव होती जा रही हैं, और नानसंख्य राष्ट्रीय तथा स्थानीय साहित्यों से एक विश्व साहित्य उदित हो रहा है।

सभी उत्पादन उपकरणों में तीव्र सुधार और अत्यंत सुकरकृत संचार-साधनों के ज़रिये बुर्जुआ वर्ग सभी, यहां तक कि बर्बर से बर्बर राष्ट्रों को भी सभ्यता की परिधि में खींच लाता है। उसके मालों के सस्ते दाम — यही वह भारी तोपखाना है, जिसकी सहायता से वह सभी चीनी दीवारों को



ढहा देता है और विदेशियों के प्रति बर्बर जातियों की अत्यंत अदम्य घृणा को घुटने टेकने के लिए मजबूर कर देता है। वह प्रत्येक राष्ट्र को, अन्यथा विलुप्त हो जाने के भय से, बुर्जुआ उत्पादन प्रणाली अपनाने के लिए मजबूर करता है; वह उन्हें इसके लिए मजबूर करता है कि जिसे वह सभ्यता कहता है, वे उसका अपने बीच प्रचलन करें, अर्थात् खुद बुर्जुआ बन जायें। संक्षेप में, वह अपने ही सांचे में ढली दुनिया का निर्माण करता है।

बुर्जुआ वर्ग ने देहात को शहर के प्रभुत्व के अधीन कर दिया है। उसने विराट नगर स्थापित कर दिये हैं, देहाती आबादी की तुलना में शहरी आबादी में अत्यधिक वृद्धि कर दी है और, इस प्रकार, आबादी के एक बड़े भाग को देहाती जीवन की जड़ता से मुक्त कर दिया है। जिस तरह से उसने देहात को शहर का आश्रित बना दिया है, उसी तरह उसने बर्बर और अर्धबर्बर देशों को सभ्य देशों का, कृषक राष्ट्रों को बुर्जुआ राष्ट्रों का, पूरब को पश्चिम का आश्रित बना दिया है।

आबादी की, उत्पादन साधनों और संपत्ति की छितरी हुई अवस्था का बुर्जुआ वर्ग अधिकाधिक अंत करता जाता है। उसने आबादी को संकुलित कर दिया है, उत्पादन साधनों को केंद्रीकृत कर दिया है और संपत्ति को चंद लिगों के हाथों में संकेंद्रित कर दिया है। इसला अनिवार्य परिणाम राजनीतिक केंद्रीकरण था। अपने अलग हितों, कानूनों, शासनों और कर-प्रणालियों के साथ पहले के स्वतंत्र अथवा आपस में ढीले-ढाले ढंग से ही संबद्ध प्रांत एक शासन, एक विधि-संहिता, एक राष्ट्रीय वर्ग हित, एक सीमा और एक सीमाशुल्क दर के साथ एक राष्ट्र में समूहबद्ध हो गये हैं।

अपने मुश्किल से सौ साल के शासनकाल में बुर्जुआ वर्ग ने उससे अधिक शक्तिशाली और प्रचंड उत्पादक शक्तियां उत्पन्न कर दी हैं कि जितनी पिछली तमाम पीढ़ियों ने मिलकर भी नहीं की थीं। प्राकृतिक शक्तियों का मनुष्य द्वारा वशीभूत किया जाना, मशीनें, उद्योग और कृषि में रसायन का उपयोग, वाष्पचालित जहाज़रानी, रेलें, विद्युत तार-संप्रेषण, पूरे के पूरे महाद्वीपों का खेती के लिए साफ़ किया जाना, नदियों का जहाज़रानी के उपयुक्त बनाया जाना, पूरी आबादियों का मानो छूमंतर से पैदा हो जाना — किस पूर्ववर्ति सदी में यह सोचा भी जा सकता था कि सामाजिक श्रम की गोद में ऐसी उत्पादक शक्तियां सोयी पड़ी हैं?

तो हम देखते हैं: उत्पादन तथा विनिमय साधन, जिनकी बुनियाद पर बुर्जुआ वर्ग ने अपने को स्थापित किया था, सामंती समाज में उत्पन्न हुए थे। इन उत्पादन तथा विनिमय साधनों के विकास की एक खास मंजिल पर वे अवस्थाएं, जिनमें सामंती समाज उत्पादन और विनिमय करता था, कृषि और मैनुफ़ैक्चरिंग उद्योग का सामंती संगठन, एक शब्द में सामंती सांपत्तिक संबंध अब पहले ही विकसित उत्पादक शक्तियों के अनुरूप नहीं रह गये; वे नाना बेड़ियां बन गये। उन्हें चकनाचूर करना आवश्यक हो गया और उन्हें चकनाचूर कर दिया गया।

उन्का स्थान मुक्त प्रतियोगिता ने और उसके साथ-साथ उसके अनुरूप सामाजिक तथा राजनीतिक ढांचे ने और बुर्जुआ वर्ग के आर्थिक तथा राजनीतिक प्रभुत्व ने ले लिया।

हमारी आंखों के सामने भी ठीक इसी तरह का आंदोलन चल रहा है। उत्पादन, विनियम और संपत्ति के अपने संबंधों के साथ आधुनिक बर्जुआ समाज, वह समाज, जिसने जैसे तिलिस्म से ऐसे विराट उत्पादन तथा विनियम साधनों को सृज दिया है, ऐसे जादूगार की तरह है, जिसने अपने जादू से पाताल लोक की शक्तियों को बुला लिया है, पर अब उन्हें वश में रकने में असमर्थ है। पिछले कई दशकों से उद्योग और वाणिज्य का इतिहास सिर्फ आधुनिक उत्पादक शक्तियों के आधुनिक उत्पादन अवस्थाओं के खिलाफ़, उन सांपत्तिक संबंधों के खिलाफ़ विद्रोह का ही इतिहास है, जो बर्जुआ वर्ग और उसके शासन के अस्तित्व की शर्तें हैं। यहां पर वाणिज्यिक संकटों का उल्लेख काफ़ी है, जो अपने नियतकालिक आवर्तन द्वारा समस्त बर्जुआ समाज के अस्तित्व को हर बार अधिकाधिक सख़्त ढंग से आजमाते हैं। इन संकटों में न केवल विद्यमान उत्पादों का ही, बल्कि पूर्वसर्जित उत्पादक शक्तियों का भी एक बड़ा भाग समय-समय पर नष्ट हो जाता है। इन संकटों के समय एक महामारी फूट पड़ती है, जो सभी पूर्ववर्ति युगों में एक असंगति प्रतीत होती — अर्थात् अत्युत्पादन की महामारी। समाज अचानक अपने आपको श्रणिक बर्बरता की अवस्था में लौटा हुआ पाता है; लगता है, जैसे किसी अकाल या सर्वनाशी विश्वयुद्ध ने उसके सभी निर्वाह साधनों की पूर्ति को एकबारगी ख़तम कर दिया हो; उद्योग और वाणिज्य नष्ट हो गये प्रतीत होते हैं; और क्यों? इसलिए कि समाज में सभ्यता का, निर्वाह साधनों का, उद्योग और वाणिज्य का अतिशय हो गया है। समाज को उपलब्ध उत्पादक शक्तियां बर्जुआ संपत्ति की अवस्थाओं के विकास का अब संवर्धन नहीं करतीं; इसके विपरीत, वे इन अवस्थाओं के लिए,

जिन्होंने उन्हें बांध रखा है, अत्यधिक प्रबल हो गयी हैं, और जैसे ही वे इन बंधनों पर पार पाने लगती हैं कि वे सारे ही बुर्जुआ समाज में अव्यवस्था उत्पन्न कर देती हैं, बुर्जुआ संपत्ति के अस्तित्व को खतरे में डाल देती हैं। बुर्जुआ समाज की अवस्थाएं उनके द्वारा उत्पादित संपत्ति को समाविष्ट करने के लिए बहुत संकुचित हो जाती हैं। और भला बुर्जुआ वर्ग इन संकटों पर किस प्रकार पार पाता है? एक ओर, उत्पादक शक्तियों की पूरी-पूरी संहति के बलात विनाश द्वारा और दुसरी ओर, नये-नये बाज़ारों पर क़ब्ज़े द्वारा और साथ ही पुराने बाज़ारों के और भी पूर्णतर दोहन द्वारा। कहने का मतलब यह कि और भी व्यापक और विनाशकारी संकटों के लिए पथ प्रशस्त करके और इन संकटों को रोकने के साधनों को घटाकर।

जिन हथियारों से बुर्जुआ वर्ग ने सामंतवाद को पराभूत किया था, वे अब स्वयं बुर्जुआ वर्ग के विरुद्ध ही तन जाते हैं।

किंतु बुर्जुआ वर्ग ने केवल ऐसे हथियार ही नहीं गढ़े हैं, जो उसकी मृत्यु को लाते हैं, बल्कि उसने उन लोगों को भी पैदा किया है। जिन्हें इन हथियारों को इस्तेमाल करना है — आज के मज़दूर, सर्वहारा वर्ग।

जिस अनुपात में बुर्जुआ वर्ग, अर्थात् पूंजी का विकास होता है, उसी अनुपात में सर्वहारा का, आधुनिक मज़दूरों के वर्ग का भी विकास होता है, जो तभी तक ज़िंदा रह सकते हैं, जब तक उन्हें काम मिलता है, और उन्हें काम तभी तक मिलता है, जब तक उनका श्रम पूंजी को बढ़ाता है। ये मज़दूर, जिन्हें अपने आपको अलग-अलग बेचना होता है, किसी भी अन्य

वाणिज्यिक वस्तु की तरह खुद भी जिंस हैं, और इसलिए वे होड़ के हर उतार-चढ़ाव तथा बाज़ार की हर तेज़ी-मंदी के शिकार होते हैं।

मशीनों के व्यापक उपयोग तथा श्रम-विभाजन के कारण सर्वहाराओं के काम ने समस्त वैयक्तिक चरित्र और, परिणामस्वरूप, मज़दूर के लिए समस्त आकर्षण को गंवा दिया है। मज़दूर मशीन का पुछल्ला बन जाता है और उससे सिर्फ़ सबसे सरल, सबसे नीरस और सबसे आसानी से अर्जित कौशल की अपेक्षा की जाती है। अतः, मज़दूर की उत्पादन लागत लगभग पूर्णतः उसके निर्वाह तथा वंश-वृद्धि के लिए आवश्यक साधनों तक ही सीमित है। लेकिन हर जिंस का और इसलिए श्रम का भी दाम उसकी उत्पादन लागत के बराबर होता है। इसलिए जिस अनुपात में काम की अरूचिकरता में वृद्धि होती है, उसी अनुपात में मज़दूरी घटती है। यही नहीं, जिस मात्रा में मशीनों का उपयोग तथा श्रम-विभाजन बढ़ता है, उसी मात्रा में श्रम का बोझ भी बढ़ता है, चाहे यह कार्य-समय बढ़ाने के ज़रिये हो, या निर्धारित समय में मज़दूरों से अधिक काम लेने, या मशीन की बढ़ी हुई रफ़्तार, आदि के ज़रिये।

आधुनिक उद्योग ने पितृसत्तात्मक मास्टर (patriarchal master) की छोटी-सी कार्यशाला को औद्योगिक पूंजीपति के विशाल कारख़ाने में बदल दिया है। कारख़ाने में ठसे झुंड के झुंड मज़दूरों को सैनिकों की तरह संगठित किया जाता है। औद्योगिक फ़ौज के सिजाहियों की तरह वे बाक्रायदा एक दरजावार तरतीब में बंटे हुए अफ़सरों और जमादारों की कमान में रखे जाते हैं। वे सिर्फ़ बुर्जुआ वर्ग और बुर्जुआ राज्य के ही दास नहीं हैं; बल्कि

उन्हें घड़ी-घड़ी, दिन-दिन मशीन, अधीक्षक और सर्वोपरि खुद बुर्जुआ कारखानेदार द्वारा भी दासता में लिया जाता है। यह निरंकुशता जितना ही अधिक खुले तौर पर मुनाफ़े को अपना लक्ष्य और उद्देश्य घोषित करती है, वह उतना ही अधिक तुच्छ, घृणित और कटु होती है।

शारीरिक श्रम में कुशलता और ताक़त की ज़रूरत जितना ही कम होती जाती है। अर्थात् आधुनिक उद्योग जितना ही अधिक विकसित होता जाता है, उतना ही अधिक पुरुषों के श्रम का स्थान स्त्रियों का क्षम लेता जाता है। मज़दूर वर्ग के संदर्भ में आयु और लिंगभेद का कोई विशिष्ट सामाजिक हेतु नहीं रह गया है। सभी श्रम के उपकरण हैं — आयु और लिंगभेद के अनुसार किसी पर खर्च कम बैठता है, तो किसी पर ज़्यादा।

कारखानेदार द्वारा मज़दूर के शोषण का फ़िलहाल अंत हुआ नहीं, और उसे नक़द मज़दूरी मिली नहीं कि फ़ौरन बुर्जुआ वर्ग के अन्य अंशक — मकान-मालिक, दुकानदार, महाजन, आदि — उस पर टूट पड़ते हैं।

मध्यवर्ग के निचले संस्तर-छोटे व्यापारी, छोटे दूकानदार और सामान्यतः किरायाजीवी, दस्तकार और किसान — ये सब धीरे-धीरे सर्वहारा की क्रतारों में लीन होते जाते हैं, अंशतः इसलिए कि आधुनिक उद्योग जिस पैमाने पर चलता है, उसके लिए उनकी छोटी पूंजी काफ़ी नहीं होती और बड़े पूंजीपतियों के साथ होड़ में वह डूब जाती है, और अंशतः इसलिए कि उत्पादन के नये-नये तरीकों के निकल आने के कारण उनके विशिष्टीकृत

कौशल का कोई मूल्य नहीं रह जाता है। इस प्रकार, सर्वहारा की भरती आबादी के सभी वर्गों से होती है।

सर्वहारा विकास की विभिन्न मंज़िलों से होकर गुजरता है। जन्मकाल से ही बुर्जुआ वर्ग से उसका संघर्ष शुरू हो जाता है। शुरू में इक्के-दुक्के मज़दूर लड़ते हैं, फिर एक कारख़ाने के मज़दूर मिलकर लड़ते हैं और फिर एक पेशे के, एक इलाक़े के सब मज़दूर एक साथ उस अलग बुर्जुआ से मोरचा लेते हैं, जो उनका सीधे-सीधे शोषण करता है। वे अपने हमले उत्पादन की बुर्जुआ अवस्थाओं के विरुद्ध नहीं, बल्कि खुद उत्पादनोपकरणों के विरुद्ध लक्षित करते हैं; वे अपनी मेहनत के साथ होड़ करनेवाले आयातित सामानों को नष्ट कर देते हैं, मशीनों को तोड़ देते हैं, फ़ैक्टरियों में आग लगा देते हैं, वे मध्ययुग के कारीगर की खोयी हुई हैसियत को बलपूर्वक बहाल करने की कोशिश करते हैं।

इस मंज़िल में मज़दूर देश भर में बिखरी असंबद्ध और अपनी ही आपसी होड़ के कारण बंटी हुई भीड़ ही होते हैं। अगर कहीं एक साथ होने से उनका अधिक ठोस समुदाय बन भी जाता है, तो यह अभी खुद उनके सक्रिय एके का नहीं, बल्कि बुर्जुआ वर्ग के एके का फल होता है, जिसे स्वयं अपने राजनीतिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए पूरे सर्वहारा वर्ग को गतिशील करना पड़ता है और वह ऐसा करने में अभी कुछ समय तक समर्थ भी होता है। इसलिए इस मंज़िल में सर्वहारा अपने शत्रुओं से नहीं, बल्कि अपने शत्रुओं के शत्रुओं से, निरंकुश राजतंत्र के अवशेषों, भूस्वामियों, ग़ैर-औद्योगिक बुर्जुआओं, निम्नबुर्जुआओं से लड़ता है। इस प्रकार, समस्त

ऐतिहासिक गतिविधि बुर्जुआ वर्ग के हाथों में संकेंद्रित रहती है; इस प्रकार हासिल की गयी हर जीत बुर्जुआ वर्ग की जित होती है।

लेकिन उद्योग के विकास के साथ-साथ सर्वहारा की सिर्फ संख्या में ही वृद्धि नहीं होती, बल्कि वह बड़ी-बड़ी संहतियों में संकेंद्रित हो जाता है, उसकी ताकत बढ़ जाती है, और उसे अपनी इस ताकत का अधिकाधिक एहसास होने लगता है। मशीन जिस अनुपात में श्रम के तमाम भेदों को मिटाती जाती है और लगभग सभी जगह मज़दूरी को एक ही निम्नस्तर पर लाती जीवन जाती है, उसी अनुपात में सर्वहारा की पांतों में विभिन्न हितों और जीवन की अवस्थाओं का अधिकाधिक समीकरण होता जाता है। बुर्जुआ वर्ग में बढ़ती हुई प्रतियोगिता और उससे पैदा होनेवाले व्यापारिक संकटों के कारण मज़दूरों की मज़दूरी और भी अस्थिर हो जाती है। मशीनों में लगातार सुधार, जिसमें निरंतर तेज़ी आती जाती है, मज़दूरों की जीविका को अधिकाधिक अनिश्चित बना देता है; अलग-अलग मज़दूरों और अलग-अलग बुर्जुआओं के बिच टकराव अधिकाधिक दो वर्गों के बिच टकरावों की शकल अख़्तियार करते जाते हैं। और तब मज़दूर बुर्जुआओं के विरुद्ध अपने संगठन (ट्रेड-यूनियनें) बनाने लगते हैं, मज़दूरी की दर को क़ायम रखने के लिए वे संघबद्ध होते हैं; समय-समय पर होनेवाले इन विद्रोहों के लिए पहले से तैयार रहने के निमित्त वे स्थायी संघों की स्थापना करते हैं। जहां-तहां उनकी लड़ाई बलवों का रूप धारण कर लेती है।



जब-तब मज़दूरों की जीत भी होती है, लेकिन सिर्फ़ वक़्ती तौर पर। उनकी लड़ाइयों का असली फल तात्कालिक नतीजे में नहीं, बल्कि मज़दूरों की निरंतर बढ़ती हुई एकता में है। आधुनिक उद्योग द्वारा सर्जित सुधरे संचार-साधन, जो अलग-अलग जगहों के मज़दूरों को एक दूसरे के संपर्क में ला देते हैं, एकता के इस काम में सहायता देते हैं। एक ही स्वरूप के अनगिनत स्थानीय संघर्षों को एक राष्ट्रीय वर्ग संघर्ष में केंद्रीकृत करने के लिए बस इसी संपर्क की ज़रूरत थी। लेकिन प्रत्येक वर्ग संघर्ष एक राजनीतिक संघर्ष होता है। और उस एके को, जिसे हासिल करने के लिए अपनी शोचनीय सड़कों के कारण मध्ययुग के नगरवासियों को सादियां लगी थीं, रेलों की बदौलत आधुनिक सर्वहारा कुछ ही वर्षों में हासिल कर लेते हैं।

सर्वहाराओं का एक वर्ग में और फलतः एक राजनीतिक पार्टी में यह संगठन स्वयं मज़दूरों के बीच प्रतिस्पर्धा के कारण फिर निरंतर भंग होता रहता है। लेकिन हर बार वह फिर उठ खड़ा होता है — पहले से भी अधिक मज़बूत, दृढ़ और शक्तिशाली बनकर। स्वयं बुर्जुआ वर्ग की भीतरी फूटों का फ़ायदा उठाकर वह मज़दूरों के विशेष हितों की क़ानूनी तौर पर मंजूरी हासिल कर लेता है। इंगलैंड में दस घंटे के कार्य-दिवस का क़ानून इसी तरह पारित हुआ था।

पुराने समाज के विभिन्न वर्गों के बिच टकराव कुल मिलाकर सर्वहारा के विकास की प्रक्रिया को अनेक रूपों में बढ़ावा ही देते हैं। बुर्जुआ वर्ग अपने को एक लगातार लड़ाई में फंसा पाता है। पहले अभिजात वर्ग के विरुद्ध, बाद में स्वयं बुर्जुआ वर्ग के उन अंशकों के विरुद्ध, जिनके हित उद्योग की प्रगति के प्रतिकूल हो जाते हैं, और विदेशों के बुर्जुआ वर्ग का विरुद्ध तो

निरंतर। इन तमाम लड़ाइयों में वह अपने को सर्वहारा की तरफ़ मुड़ने, उससे मदद मांगने और, इस प्रकार, उसे राजनीतिक रंगमंच में खींचने के लिए मजबूर पाता है। अतः बुर्जुआ वर्ग स्वयं ही सर्वहारा को राजनीतिक तथा सामान्य शिक्षा के अपने तत्व प्रदान करता है, अर्थात् सर्वहारा को बुर्जुआ वर्ग से लड़ने के हथियार मुहैया करता है।

आगे चलकर, जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, उद्योग की उन्नति के कारण शासक वर्गों के पूरे के पूरे अंशक सर्वहाराओं की अवस्था में पहुंच जाते हैं, या कम से कम उनके अस्तित्व की अवस्थाओं के लिए खतरा पैदा हो जाता है। ये लोग भी सर्वहारा को ज्ञानोद्दीप्ति और प्रगति के नये तत्व प्रदान करते हैं।

अंत में, जिन दौरों में वर्ग संघर्ष निर्णायक घड़ी के नज़दीक पहुंच जाता है, उनमें शासक वर्ग के भीतर, वस्तुतः संपूर्ण पुराने समाज के भीतर चल रही विघटन की प्रक्रिया इतना प्रचंड और सुस्पष्ट स्वरूप ग्रहण कर लेती है कि शासक वर्ग का एक छोटा-सा अंशक उससे अलग हो जाता है और क्रांतिकारी वर्ग के साथ, उस वर्ग के साथ, जिसके हाथ में भविष्य होता है, आ मिलता है। इसलिए जिस तरह एक पूर्ववर्ती युग में अभिजात वर्ग का एक अंशक बुर्जुआ वर्ग के पक्ष में चला गया था, उस तरह अब बुर्जुआ वर्ग का एक हिस्सा, और विशेषकर बुर्जुआ विदारधारा-निरूपकों का एक हिस्सा, जिन्होंने अपने आपको इतिहास की गति को समग्ररूपेण सिद्धांततः समझने के स्तर तक उठा लिया है, सर्वहारा के पक्ष में चला जाता है।

जो भी वर्ग आज बुर्जुआ वर्ग के मुक़ाबले पर खड़े हुए हैं, उनमें अकेला सर्वहारा ही वस्तुतः क्रांतिकारी वर्ग है। आधुनिक उद्योग के आगे अन्य वर्ग क्षय हो जाते हैं और अंततः विलुप्त हो जाते हैं; सर्वहारा उसका विशेष और अनिवार्य उत्पाद है।

निम्न मध्यवर्ग के लोग — छोटे कारख़ानेदार, दस्तकार, छोटे व्यापारी, किसान — ये सब बुर्जुआ वर्ग के खिलाफ़ इसके लिए लड़ते हैं कि मध्यवर्ग के अंश के रूप में अपने अस्तित्व को विनष्ट होने से बचा सकें। इसलिए वे क्रांतिकारी नहीं, रूढ़िवादी हैं। इतना ही नहीं, वे प्रतिगामी हैं, क्योंकि वे इतिहास के चक्र को पीछे की ओर घुमाने की कोशिश करते हैं। अगर कहीं संयोग से वे क्रांतिकारी हैं, तो सिर्फ़ इसलिए कि उनका बहुत जल्द सर्वहारा की क़तारों में चले जाना नियत है; चुनांचे वे अपने वर्तमान नहीं, बल्कि भविष्य के हितों की सक्षा करते हैं; अपने दृष्टिबिंदु को वे इसलिए तज देते हैं कि सर्वहारा के दृष्टिबिंदु पर आ जाये।

“ख़तरनाक वर्ग”, समाज का कचरा, पुराने समाज के निम्नतम स्तरों में से निकला हुआ और निष्क्रियता के किचड़ में सड़ता हुआ यह समूह जहां-तहां सर्वहारा क्रांति की आंधी में पड़कर आंदोलन में खिंच आ सकता है, लेकिन उसके जीवन की अवस्थाएं उसे प्रतिक्रियावादी षडूयंत्र के भाड़े के टट्टू का काम करने के लिए कहीं अधिक तैयार करती हैं।

सर्वहारा की मौजूदा अवस्थाओं में समूचे तौर पर पुराने समाज की अवस्थाएं पहले ही वस्तुतः विलुप्त हो चुकी हैं। सर्वहारा के पास कोई संपत्ति नहीं होती; अपनी पत्नी और अपने बच्चों के साथ उसका जो संबंध

है; उसकी बुर्जुआ पारिवारिक संबंधों से अब कोई सामान्यता नहीं रह गयी है; आधुनिक औद्योगिक श्रम ने, पूंजी के आधुनिक जूए ने, जो इंगलैंड, फ़्रांस, अमरीका और जर्मनी, सब जगह एक-सा ही है, सर्वहारा को राष्ट्रीय चरित्र के सभी चिह्नों से वंचित कर दिया है। क़ानून, नैतिकता, धर्म — ये सब उसके लिए नाना बुर्जुआ पूर्वग्रह मात्र हैं, जिसकी ओट में इतने ही बुर्जुआ हित घात में छिपे हुए हैं।

अपना प्रभुत्व स्थापित करनेवाले सभी पूर्ववर्ती वर्गों ने समूचे तौर पर समाज को अपनी हस्तगतकरण-प्रणाली के अधीन करके अपनी पहले ही अर्जित हैसियत को मज़बूत करने की कोशिश की है। सर्वहारा अपनी पुरानी हस्तगतकरण-प्रणाली का और उसके साथ-साथ पहले की हर अन्य हस्तगतकरण-प्रणाली का नाश किये बिना समाज की उत्पादक शक्तियों के स्वामी नहीं बन सकते। उनके पास सुरक्षित रखने और सुदृढ़ करने के लिए अपना कुछ भी नहीं है; उनका जीवन-लक्ष्य व्यक्तिगत संपत्ति की सभी पुरानी प्रत्याभूतियों और ज़मानतों को नष्ट कर देना है।

सभी पूर्वगामी ऐतिहासिक आंदोलन अल्पसंख्या के अथवा अल्पसंख्या के हितों में आंदोलन थे। सर्वहारा आंदोलन अपार बहुसंख्या का, अपार बहुसंख्या के हित में चेतन तथा स्वतंत्र आंदोलन है। हमारे वर्तमान समाज का निम्नतम संस्तर, सर्वहारा शासकीय समाज की तमाम ऊपरी परतों को हवा में उड़ाये बिना किसी प्रकार हिल तक नहीं सकता, अपने को उठा नहीं सकता।

बुर्जुआ वर्ग के खिलाफ़ सर्वहारा का संघर्ष यद्यपि अंतर्य की दृष्टि से नहीं, तथापि रूप की दृष्टि से आरंभ में राष्ट्रिय संघर्ष होता है। निस्संदेह, हर देश के सर्वहारा को सबसे पहले अपने ही बुर्जुआ वर्ग से निबटना चाहिए।

सर्वहारा के विकास सबसे सामान्य चरणों का वर्णन करते हुए हमने विद्यमान समाज के भीतर न्यूनाधिक प्रच्छन्न रूप से चलनेवाले गृहयुद्ध का उसी बिंदु तक चित्रण किया है, जहां वह युद्ध खुली क्रांति में परिणत हो जाता है और जहां बुर्जुआ वर्ग का बलात तख़्ता पलट सर्वहारा के प्रभुत्व की बुनियाद डालता है।

अभी तक, जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, समाज का हर रूप उत्पीड़क और उत्पीड़ित वर्गों के विरोध पर आधारित रहा है। लेकिन किसी भी वर्ग का उत्पीड़न करने के लिए कुछेक अवस्थाएं सुनिश्चित (assure) करना आवश्यक है, जिनमें वह कम से कम अपने दासवत अस्तित्व को बनाये रख सके। भूदासता के युग में भूदास ने अपने को कम्यून के सदस्य की स्थिति तक उठा लिया, ठीक जैसे निम्नबुर्जुआ सामंती निरंकुशता के जूए के निचे बुर्जुआ में विकसित होने में कामयाब हो गया था। इसके विपरीत, आधुनिक मज़दूर उद्योग की प्रगति के साथ ऊपर इठने के बजाय स्वयं अपने वर्ग के अस्तित्व के लिए आवश्यक अवस्थाओं के स्तर अधिकाधिक नीचे ही गिरता है। वह कंगाल हो जाता है और कंगाली आबादी और दौलत से भी ज़्यादा तेज़ी से बढ़ती है। और यहां यह प्रत्यक्ष हो जाता है कि बुर्जुआ वर्ग अब समाज में शासक वर्ग होने और समाज पर अपने अस्तित्व की अवस्थाओं को एक अभिभावी नियम के रूप में लादने के अयोग्य है। वह शासन करने के अयोग्य है, क्योंकि वह अपने दास का अपनी दासता में अस्तित्व

सुनिश्चित करने में अक्षम है, क्योंकि वह उसका ऐसी स्थिति में गिरना नहीं रोक सकता कि जब उसे दास का पेट भरना पड़ता है, बजाय दास से उसका पेट भरे। समाज इस बुर्जुआ वर्ग के अधीन अब और नहीं रह सकता, दूसरे शब्दों में, उसका अस्तित्व अब समाज से मेल नहीं खाता।

बुर्जुआ वर्ग के अस्तित्व और प्रभुत्व की शर्त पूंजी का निर्माण और वृद्धि है; और पूंजी की शर्त है उजरती श्रम। उजरती श्रम पूर्णतया मज़दूरों के बिच प्रतिस्पर्धा पर निर्भर है। उद्योग की उन्नति, बुर्जुआ वर्ग जिसका अनभिप्रेत संवर्धक है, प्रतिस्पर्धा से जनित मज़दूरों के अलगाव की संसर्ग से जनित उनके क्रांतिकारी एके से प्रतिस्थापना कर देती है। इस तरह, आधुनिक उद्योग का विकास बुर्जुआ वर्ग के पैरों के तले से उस बुनियाद को ही खिसका देना है, जिस पर वह उत्पादों को उत्पादित और हस्तगत करता है। अतः, बुर्जुआ वर्ग सर्वोपरि अपनी कंब्र खोदनेवालों को ही पैदा करता है। उसका पतन और सर्वहारा की विजय, दोनों समान रूप से अवश्यंभावी हैं।

## २. सर्वहारा और कम्युनिस्ट

समग्र रूप में सर्वहाराओं के साथ कम्युनिस्टों का क्या संबंध है?

कम्युनिस्ट दूसरी मज़दूर पार्टियों के विरुद्ध अपनी कोई अलग पार्टी नहीं बनाते।

समग्र रूप में सर्वहारा के हितों के अलावा और पृथक उनके कोई हित नहीं हैं।

वे सर्वहारा आंदोलन को ख़ास नमूने पर ढालने या विशेष रूप प्रदान करने के लिए अपने कोई संकीर्ण सिद्धांत नहीं स्थापित करते।

कम्युनिस्ट दूसरी मज़दूर पार्टियों से सिर्फ़ इस लिहाज़ से भिन्न हैं: १. विभिन्न देशों के सर्वहाराओं के राष्ट्रीय संघर्षों में वे राष्ट्रीयता से सर्वथा निरपेक्षतः समस्त सर्वहारा के सामान्य हितों को इंगित करते और सामने लाते हैं। २. बुर्जुआ वर्ग के खिलाफ़ मज़दूर वर्ग के संघर्ष को जिन विभिन्न मंज़िलों से होकर गुज़रता होता है, उनमें वे हमेशा और हर कहीं समूचे तौर पर आंदोलन के हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

अतः कम्युनिस्ट, एक ओर, व्यवहार में हर देश की मज़दूर पार्टियों के सबसे आगे बढ़े हुए और कृतसंकल्प जुज़ होते हैं, ऐसा जुज़, जो और सभी को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है; दूसरी ओर, सैद्धांतिक दृष्टि से उन्हें सर्वहारा के विशाल जनसमुदाय पर सर्वहारा आंदोलन के आगे बढ़ने के रास्ते, उसकी अवस्थाओं और उसके अंतिम सामान्य परिणामों की सुस्पष्ट समझ रखने की श्रेष्ठता प्राप्त है।

कम्युनिस्टों का तात्कालिक लक्ष्य वही है, जो अन्य सभी सर्वहारा पार्टियों का है, अर्थात् सर्वहारा का एक वर्ग के रूप में गठन, बुर्जुआ प्रभुत्व का तख़्ता उलटना, सर्वहारा द्वारा राजनीतिक सत्ता का जीता जाना।

कम्युनिस्टों के सैद्धांतिक निष्कर्ष इस या उस तथाकथित जगत-सुधारक द्वारा आविष्कृत अथवा अन्वेषित विचारों या सिद्धांतों पर किसी भी तरह आधारित नहीं हैं।

वे केवल चल रहे वर्ग संघर्ष से या हमारी आंखों के ही सामने हो रही ऐतिहासिक हलचल से उत्पन्न वास्तविक संबंधों को सामान्य शब्दों में व्यक्त करते हैं। विद्यमान संपत्ति-संबंधों का उन्मूलन कम्युनिज़्म की कोई लाक्षणिक विशेषता हरगिज़ नहीं है।

अतीत में सभी संपत्ति-संबंध ऐतिहासिक अवस्थाओं में परिवर्तन के परिणामस्वरूप निरंतर ऐतिहासिक परिवर्तन के अधीन रहे हैं।

उदाहरण के लिए, फ़्रांसीसी क्रांति ने बुर्जुआ स्वामित्व के हक़ में सामंती स्वामित्व का उन्मूलन कर दिया।

कम्युनिज़्म की लाक्षणिक विशेषता सामान्यतया स्वामित्व का उन्मूलन नहीं, बल्कि बुर्जुआ स्वामित्व का उन्मूलन है। लेकिन आधुनिक बुर्जुआ निजी स्वामित्व उत्पादों के उत्पादन तथा हस्तगतकरण की उस प्रणाली की अंतिम और पूर्णतम अभिव्यक्ति है, जो वर्ग विग्रहों पर और कुछ द्वारा बहुतों के शोषण पर आधारित है।

इस अर्थ में कम्युनिज़्म के सिद्धांत का एक अकेले वाक्य में समाहार किया जा सकता है : निजी स्वामित्व का उन्मूलन।

हम कम्युनिस्टों पर आरोप लगाया गया है कि हम मनुष्य के संपत्ति को स्वयं अपनी मेहनत के फल के रूप में निजी तौर पर अर्जित करने के अधिकार का उन्मूलन करना चाहते हैं, जिस संपत्ति को समस्त वैयक्तिक स्वतंत्रता, क्रियाशीलता और स्वाधीनता का मूलाधार कहा जाता है।



सख्त मेहनत से, स्वयं अर्जित, अपने श्रम से प्राप्त संपत्ति! आपका मतलब क्या छोटे दस्तकार और छोटे किसान की संपत्ति, स्वामित्व के उस रूप से है, जो बुर्जुआ रूप का पूर्वगामी था? उसके उन्मूलन की कोई ज़रूरत नहीं, उद्योग के विकास ने पहले ही उसको काफ़ी हद तक नष्ट कर दिया है और अब भी दिनोंदिन नष्ट करता जा रहा है।

या आपका मतलब आधुनिक बुर्जुआ निजी संपत्ति से है?

लेकिन क्या उजरती श्रम मज़दूर के लिए कोई संपत्ति पैदा करता है?

हरगिज़ नहीं। वह तो पूंजी पैदा करता है, यानी ऐसी संपत्ति, जो उजरती श्रम का शोषण करती है और जिसके बढ़ने की शर्त ही यह है कि वह नये शोषण के लिए नये उजरती श्रम को पैदा करती जाये। अपने वर्तमान रूप में संपत्ति पूंजी और उजरती श्रम के विरोध पर आधारित है। आइये, इस विरोध के दोनों पहलुओं पर गौर करें।

पूंजीपति होना केवल शुद्धतः व्यक्तिगत ही नहीं, बल्कि उत्पादन में एक सामाजिक हैसियत रखना है। पूंजी एक सामूहिक उत्पाद है, और केवल समाज के बहुत-से सदस्यों के संयुक्त कार्यकलाप से ही, बल्कि अंततोगत्वा समाज के सभी सदस्यों के संयुक्त कार्यकलाप से ही उसे गतिशील किया जा सकता है।

इस प्रकार, पूंजी निजी नहीं, एक सामाजिक शक्ति है।

इसलिए पूंजी को अगर सामान्य संपत्ति में, समाज के तमाम सदस्यों की संपत्ति में परिवर्तित कर दिया जाता है, तो इससे वैयक्तिक संपत्ति

सामाजिक संपत्ति में नहीं बदल जाती। तब संपत्ति का केवल सामाजिक स्वरूप बदलता है। वह अपना वर्ग स्वरूप गंवा देती है।

आईये, अब उजरती श्रम को लें।

उजरती श्रम की औसत क्रीमत न्यूनतम मज़दूर है, अर्थात् निर्वाह साधनों की वह मात्रा, जो मज़दूर की हैसियत से मज़दूर के अस्तित्व मात्र को बनाये रखने के लिए एकदम जरूरी हो। इसलिए उजरती मज़दूर अपने श्रम से जो कुछ हस्तगत करता है, वह उसके अस्तित्व मात्र को बनाये रखने और पुनरुत्पादित करने के लिए ही काफ़ी होता है। हम श्रम के उत्पादों के इस निजी हस्तगतकरण का, मानव जीवन के अनुरक्षण तथा पुनरुत्पादन के लिए किये जानेवाले और ऐसी कोई बेशी, जिससे औरों के श्रम को मातहत किया जा सके, न छोड़नेवाले हस्तगतकरण का हरगिज़ उन्मूलन करना नहीं चाहते। हम सिर्फ़ जिसका ख़ात्मा करना चाहते हैं, वह है इस हस्तगतकरण का वह दयनीय स्वरूप, जिसके अधीन मज़दूर सिर्फ़ पूंजी को बढ़ाने के लिए ही ज़िंदा रहता है, और उसे उसी हद तक ज़िंदा रहने दिया जाता है कि जहां तक शासक वर्ग के हित इसकी मांग करते हैं।

बुर्जुआ समाज में जीवित श्रम संचित श्रम को बढ़ाने का साधन मात्र है। कम्युनिस्ट समाज में संचित श्रम मज़दूर के अस्तित्व को व्यापक, संपन्न और संवर्धित करने का साधन मात्र है।

इस प्रकार, बुर्जुआ समाज में वर्तमान को अतीत शासित करता है; कम्युनिस्ट समाज में अतीत को वर्तमान शासित करता है। बुर्जुआ समाज में

पूँजी स्वतंत्र है और उसकी वैयक्तिकता होती है, किंतु जीवित व्यक्ति परतंत्र है और उसकी कोई वैयक्तिकता नहीं होती।

और इन अवस्थाओं के उन्मूलन को बुर्जुआ वैयक्तिकता और स्वतंत्रता का उन्मूलन कहता है। और ठीक ही तो है। वास्तव में, आशय बुर्जुआ वैयक्तिकता, बुर्जुआ स्वावलंबन और बुर्जुआ स्वतंत्रता का उन्मूलन करना ही है।

मौजूदा बुर्जुआ उत्पादन अवस्थाओं के अंतर्गत स्वतंत्रता का अर्थ है मुक्त व्यापार, मुक्त क्रय-विक्रय।

लेकिन अगर क्रय-विक्रय मिट जाता है, तो मुक्त क्रय-विक्रय भी मिट जाता है। हमारे बुर्जुआ जनों की मुक्त क्रय-विक्रय के बारे में इन बातों का, सामान्यतया स्वतंत्रता के बारे में उनकी तमाम अन्य "बड़ी-बड़ी बातों" का अगर कुछ मतलब है, तो सिर्फ मध्ययुग के सीमित क्रय-विक्रय के, उस समय के बंधनों में जकड़े हुए व्यापारियों के मुकाबले में ही हो सकता है; लेकिन क्रय-विक्रय तथा उत्पादन की बुर्जुआ अवस्थाओं और स्वयं बुर्जुआ वर्ग के कम्युनिस्ट ढंग के उन्मूलन के मुकाबले में उनका कोई मतलब नहीं है।

निजी स्वामित्व का अंत कर देने के हमारे इरादे से आपके रोंगटे खड़े हो जाते हैं। लेकिन आपके मौजूदा समाज में दस में से नौ आदमियों के लिए निजी संपत्ति का पहले ही ख़ात्मा हो चुका है; चंद लोगों के पास अगर निजी संपत्ति है, तो उसका एकमात्र कारण यही है कि दस में से उन नौ के

पास वह नहीं है। इसलिए आप हमारे खिलाफ स्वामित्व के ऐसे रूप का अंत कर देने की इच्छा रखने का जुर्म लगाते हैं, जिसके अस्तित्व के लिए आवश्यक शर्त समाज के भारी बहुलांश की कैसी भी संपत्ति का न होना है।

संक्षेप में, आपका आरोप यह है कि हम आपके स्वामित्व का अंत कर देना चाहते हैं। बिलकुल यही बात है; हम ठीक यही करने की मंशा रखते हैं।

आपका कहना है कि जिस क्षण से श्रम का पूंजी, द्रव्य अथवा किराये में, एक ऐसी सामाजिक शक्ति में, जिसे एकाधिकृत किया जा सकता है, रूपांतरण बंद हो जायागा, अर्थात् जिस क्षण से वैयक्तिक स्वामित्व का बुर्जुआ स्वामित्व में, पूंजी में रूपांतरण बंद हो जायेगा, उसी क्षण से वैयक्तिकता का विलोप हो जायेगा।

इसलिए आपको यह स्वीकार करना होगा कि "व्यक्ति" का आपके लिए बुर्जुआ के अलावा, संपत्ति के मध्यवर्गीय स्वामी के अलावा किसी व्यक्ति से अर्थ नहीं है। इस व्यक्ति को तो वास्तव में रास्ते से हटा देना चाहिए, उसका होना असंभव बना दिया जाना चाहिए।

कम्युनिज़्म किसी भी आदमी को समाज के उत्पादों को हस्तगत करने की शक्ति से वंचित नहीं करता; वह केवल इस हस्तगतकरण के ज़रिये दूसरों के श्रम को वशीभूत करने की शक्ति से उसे वंचित करता है।

यह आपत्ति की गयी है कि निजी स्वामित्व का उन्मूलन किये जाने के साथ सारा काम-काज ठप हो जायेगा और सार्विक अकर्मण्यता छा जायेगी।

ऐसी हालत में तो बुर्जुआ समाज को निरी अकर्मण्यता के कारण न जाने कब का रसातल पहुंच जाना चाहिए था; क्योंकि उसके जो सदस्य काम करते हैं, वे कुछ नहीं प्राप्त करते, और जो प्राप्त करते हैं, वे काम नहीं करते। वास्तव में यह सारी आपत्ति इसी द्विरुक्ति की एक अभिव्यक्ति है कि अगर पूंजी नहीं रह जायेगी, तो उजरती श्रम भी नहीं रह जायेगा।

भौतिक उत्पादों के उत्पादन और हस्तगतकरण की कम्युनिस्ट प्रणाली के विरुद्ध जो-जो आपत्तियां की जाती हैं, वे ही बौद्धिक उत्पादों के उत्पादन और हस्तागतकरण की कम्युनिस्ट प्रणालियों के विरुद्ध भी की जाती हैं। जिस प्रकार बुर्जुआ के लिए वर्ग स्वामित्व का विलोपन स्वयं उत्पादन का ही विलोपन है, उसी प्रकार वर्ग संस्कृति का विलोपन उसके लिए समस्त संस्कृति के विलोपन के ही समान है।

वह संस्कृति, जिसके विनाश के बारे में वह विलाप करता है, भारी बहुलांश के लिए महज़ मशीन की तरह काम करने का प्रशिक्षण ही है।

लेकिन हमसे तब तक न उलझिये कि जब तक बुर्जुआ स्वामित्व के उन्मूलन के हमारे इरादे को आप आज़ादी, संस्कृति, क़ानून, आदि की अपनी बुर्जुआ धारणाओं के मापदंड से मापते हैं। आपके विचार स्वयं बुर्जुआ उत्पादन और बुर्जुआ स्वामित्व की अवस्थाओं की उपज मात्र हैं, ठीक जैसे आपका न्यायशास्त्र आपके वर्ग की इच्छा के अलावा और कुछ नहीं है, जिसे सबके लिए क़ानून में बदल दिया गया है, ऐसी इच्छा, जिसके तात्विक स्वरूप और दिशा का निर्धारण आपके वर्ग के अस्तित्व की आर्थिक अवस्थाओं द्वारा होता है।

वह स्वार्थपूर्ण भ्रम, जो आपको आपकी मौजूदा उत्पादन प्रणाली और स्वामित्व के रूप से उद्भूत होनेवाले सामाजिक रूपों को — उत्पादन के विकास में उत्पन्न और विलीन होनेवाले ऐतिहासिक संबंधों को—प्रकृति और तर्कबुद्धि के शाश्वत नियमों में रूपांतरित करने के लिए प्रेरित करता है, ऐसा भ्रम है, जिसके आप अपने हर पूर्ववर्ती शासक वर्ग के साथ सहभागी हैं। प्राचीन स्वामित्व के मामले में जिस चीज़ को आप स्पष्टता से देखते हैं, सामंती स्वामित्व के मामले में जिस चीज़ को आप स्वीकार करते हैं, उसे खुद अपने बुर्जुआ स्वामित्व के मामले में मंजूर करना आपके लिए निश्चय ही वर्जित है।

परिवार का उन्मूलन! कम्युनिस्टों के इस कलंकपूर्ण प्रस्ताव से कट्टर से कट्टर आमूल परिवर्तनवादी भी भड़क उठते हैं।

मौजूदा परिवार, बुर्जुआ परिवार, किस बुनियाद पर आधारित है? पूंजी पर, निजी लाभ पर। अपने पूर्णतः विकसित रूप में इस तरह का परिवार केवल बुर्जुआ वर्ग के बीच पाया जाता है। लेकिन यह स्थिति अपना संपूरक सर्वहाराओं में परिवार के वस्तुतः अभाव और खुली वेश्यावृत्ति में पाती है।

अपने संपूरक के मिट जाने के साथ-साथ बुर्जुआ परिवार भी कुदरती तौर पर मिट जायेगा, और पूंजी के मिटने के साथ-साथ ये दोनों मिट जायेंगे।

क्या आप हमारे ऊपर यह आरोप लगाते हैं कि हम बच्चों का उनके माता-पिता द्वारा शोषण किया जाना बंद कर देना चाहते हैं? इस अपराध को हम स्वीकार करते हैं।

लेकिन आप कहेंगे कि घरेलू शिक्षा की सामाजिक शिक्षा से प्रतिस्थापना करके हम एक अत्यंत पवित्र संबंध को नष्ट कर देते हैं।

और आपकी शिक्षा! क्या वह भी सामाजिक नहीं है और उन सामाजिक अवस्थाओं से, जिनमें आप शिक्षा देते हैं, स्कूलों के ज़रिये समाज के, प्रत्यक्ष या परोक्ष, हस्तक्षेप, आदि से निर्धारित नहीं होती है? शिक्षा में समाज का हस्तक्षेप कम्युनिस्टों की ईजाद नहीं है; कम्युनिस्ट तो केवल इस हस्तक्षेप के स्वरूप को बदलना और शिक्षा का शासक वर्ग के प्रभाव से उद्धार करना चाहते हैं।

आधुनिक उद्योग की क्रिया द्वारा सर्वहाराओं में समस्त पारिवारिक संबंधों की धजियां उड़ने और उनके बच्चों के साधारण तिजारती चीज़ों और श्रम-उपकरणों में रूपांतरित होते जाने के साथ-साथ परिवार और शिक्षा तथा माता-पिता और बच्चों के पुनीत अन्योन्य संबंध के बारे में बुर्जुआ बकवास और भी अधिक घिनौनी बनती जाती है।

सारा बुर्जुआ वर्ग गला फाड़कर एक स्वर से चिल्ला उठता है—लेकिन तुम कम्युनिस्ट तो औरतों का समाजीकरण करा दोगे।

बुर्जुआ आपनी पत्नी को एक उत्पादनोपकरण के सिवा और कुछ नहीं समझता। उसने सुन रखा है कि उत्पादन उपकरणों का सामूहिक रूप में उपयोग होगा और, स्वभावतः, वह इसके अलावा और कोई निष्कर्ष नहीं निकाल पाता कि सभी चीज़ों की तरह औरतें भी सभी के साझे की हो जायेंगी।

वह यह सोच भी नहीं सकता कि दरअसल मक़सद यह है किन औरतों की मात्र उत्पादन उपकरण होने की स्थिति का ख़ात्मा कर दिया जाये।

बाक़ी तो बात यह है कि हमारे बुर्जुआ के औरतों के समाजीकरण के खिलाफ़, जो उसके दावे के मुताबिक़ कम्युनिस्टों द्वारा खुल्लमखुल्ला और आधिकारिक रूप में स्थापित किया जायेगा, सदाजारी आक्रोश से अधिक हास्यास्पद दूसरी और कोई चीज़ नहीं है। कम्युनिस्टों को स्त्रियों का समाजीकरण प्रचलित करने की कोई ज़रूरत नहीं है; उनकी यह स्थिति तो लगभग अनादि काल से चली आ रही है।

हमारे बुर्जुआ इसी से संतोष न करके कि वे अपने मज़दूरों की बहू-बेटियों का अपनी मरज़ी के मुताबिक़ इस्तेमाल कर सकते हैं, सामान्य वेश्याओं की तो बात ही क्या, एक दूसरे की बीवियों पर हाथ साफ़ करने में विशेष आनंद प्राप्त करते हैं।

बुर्जुआ विवाह वास्तव में साझे की पत्नियों की ही व्यवस्था है, इसलिए कम्युनिस्टों के खिलाफ़ अधिक से अधिक यही आरोप लगाया जा सकता है कि वे स्त्रियों के पाखंडपूर्वक छिपाये हुए समाजीकरण की जगह खुले तौर पर क्रानूनी समाजीकरण लाना चाहते हैं। बाक़ी तो यह बात अपने आप साफ़ है कि वर्तमान उत्पादन पद्धति के उन्मूलन के साथ-साथ इस पद्धति से उत्पन्न स्त्रियों के समाजीकरण का, अर्थात् खुली और ख़ानगी, दोनों ही प्रकार की वेश्यावृत्ति का अनिवार्यतः उन्मूलन हो जायेगा।

इसके अलावा कम्युनिस्टों पर यह आरोप भी लगाया जाता है कि वे देश और राष्ट्रीयता की भावना को मिटा देना चाहते हैं।



श्रमजीवियों का कोई देश नहीं है। जो उनके पास है ही नहीं, वह उनसे कैसे छीना जा सकता है? चूंकि सर्वहारा को सबसे पहले राजनीतिक प्रभुत्व प्राप्त करना होगा, राष्ट्र का प्रधान वर्ग बन जाना होगा, अपने को राष्ट्र के रूप में गठित करना होगा, इसलिए इस हद तक वह स्वयं राष्ट्रीय है, गोकि इस शब्द के बुर्जुआ अर्थ में नहीं।

बुर्जुआ वर्ग के विकास, वणिज्य की स्वतंत्रता, विश्व बाजार और उत्पादन प्रणाली में तथा तदनुरूप जीवन की अवस्थाओं में एकरूपता के कारण जनगण के बीच राष्ट्रीय भेदभाव और विरोध दिन-दिन अधिकाधिक मिटते जाते हैं।

सर्वहारा का प्रभुत्व होने पर ये और भी तेज़ी से मिटेंगे। सर्वहारा के निस्तार की पहली शर्तों में एक यह है कि कम से कम अगुआ सभ्य देश मिलकर एक साथ क़दम उठायें।

जिस अनुपात में एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति के शोषण का अंत किया जाता है, उसी अनुपात में एक राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्र का शोषण भी समाप्त कर दिया जायेगा। जिस अनुपात में एक राष्ट्र के भीतर वर्गों के बीच विरोध विलुप्त होता है, उसी अनुपात में राष्ट्रों का आपसी वैरभाव भी दूर हो जायेगा।

धार्मिक, दार्शनिक और सामान्यतः विचारधारात्मक दृष्टि से कम्युनिज़्म के खिलाफ़ जो आरोप लगाते जाते हैं, वे इस लायक़ नहीं हैं कि उन पर गंभीरता के साथ विचार किया जाये।

क्या यह समझने के लिए गहरी अंतर्दृष्टि की ज़रूरत है कि मनुष्य के विचार, मत और उसकी धारणाएं—एक शब्द में उसकी चेतना—उसके भौतिक अस्तित्व की अवस्थाओं, उसके सामाजिक संबंधों और सामाजिक जीवन के प्रत्येक परिवर्तन के साथ बदलती है?

विचारों का इतिहास इसके सिवा और क्या साबित करता है कि जिस अनुपात में भौतिक उत्पादक में परिवर्तन होता है, उसी अनुपात में बौद्धिक उत्पादन का स्वरूप परिवर्तित होता है? हर युग को शासित करनेवाले विचार सदा उसके शासक वर्ग के ही विचार रहे हैं।

जब लोग समाज में क्रांति ला देनेवाले विचारों की बात करते हैं, तब वे केवल इसी तथ्य को व्यक्त करते हैं कि पुराने समाज के भीतर एक नये समाज के तत्व पैदा हो गये हैं और पुराने विचारों का विघटन अस्तित्व की पुरानी अवस्थाओं के विघटन के साथ क़दम मिलाकर चलता है।

जिस समय प्राचीन विश्व अपनी अंतिम सांसें गिन रहा था, प्राचीन धर्मों को ईसाई धर्म ने अभिभूत कर लिया था। जब अठारहवीं शताब्दी में ईसाई विचार तर्कबुद्धिवादी विचारों के सामने धराशायी हुए, तब सामंती समाज ने तत्कालीन क्रांतिकारी बुर्जुआ वर्ग से अपनी मौत की लड़ाई लड़ी थी। धर्म-स्वातंत्र्य और अंतःकरण की स्वतंत्रता के विचार ज्ञान जगत में मुक्त प्रतिस्पर्धा के प्रभुत्व को ही व्यक्त करते थे।

कहा जायेगा कि "यह ठीक है कि ऐतिहासिक विकास के दौरान धार्मिक, नैतिक, दार्शनिक, राजनीतिक और विधिक विचार, निस्संदेह बदले हैं।

लेकिन धर्म, नैतिकता, दर्शन, राजनीति और कानून तो सदा इस परिवर्तन से बचे रहे हैं।"

“इसके अलावा, स्वतंत्रता, न्याय, आदि जैसे शाश्वत सत्य भी हैं, जो हर समाज की हर अवस्था में समान रूप से लागू होते हैं। लेकिन उन्हें नये आधार पर प्रतिष्ठित करने के बजाय कम्युनिज़्म सभी शाश्वत सत्यों को खत्म कर देता है, वह समस्त धर्म और समस्त नैतिकता को मिटा देता है; इसलिए कम्युनिज़्म विगत इतिहास के समस्त अनुभव के विपरीत आचरण करता है।"

इस आरोप का सारतत्व क्या है? अब तक अस्तित्वमान समस्त समाज का इतिहास वर्ग विरोधों के विकास का इतिहास रहा है, जिन्होंने भिन्न-भिन्न युगों में भिन्न-भिन्न रूप धारण किया था।

पर उन्होंने चाहे जो भी रूप धारण किया हो, एक तथ्य पिछले सभी युगों में हर अवस्था में मौजूद रहा है—समाज के एक हिस्से द्वारा दूसरे हिस्से का शोषण। अतः, कोई आश्चर्य की बात नहीं कि विगत युगों की सामाजिक चेतना सारी विविधता और विभिन्नता प्रशिक्षित करने के बावजूद कुधेक सामान्य रूपों या सामान्य विचारों के दायरे में गतिशील रही है, जो वर्ग विरोधों के पूर्ण रूप से विलुप्त होने के पहले पूरी तरह नहीं मिट सकते।

कम्युनिस्ट क्रांति पारंपरिक संपत्ति संबंधों से आमूलतम विच्छेद है; फिर इसमें आश्चर्य क्या कि इस क्रांति के विकास का अर्थ है पारंपरिक विचारों से आमूलतम संबंध-विच्छेद?

लेकिन कम्युनिज़्म के खिलाफ़ बुर्जुआ आरोंपों की कथा अब समाप्त की जाये।

ऊपर हम देख आये हैं कि मज़दूर वर्ग की क्रांति में पहला कदम सर्वहारा हो उठाकर शासक वर्ग की स्थिति में लाना, जनवाद की लड़ाई को जीतना है।

सर्वहारा अपने राजनीतिक प्रभुत्व का प्रयोग बुर्जुआ वर्ग से धीरे-धीरे करके सारी पूंजी छीनने, उत्पादन के सभी उपकरणों को राज्य के, अर्थात् शासक वर्ग के रूप में संगठित सर्वहारा के हाथों में केंद्रीकृत करने तथा उत्पादक शक्तियों की समग्रता में यथाशीघ्र वृद्धि करने के लिए करेगा।

निस्संदेह, आरंभ में यह काम सांपत्तिक अधिकारों पर, और बुर्जुआ उत्पादन की अवस्थाओं पर निरंकुश हमलों के बिना नहीं हो सकता; अतः, ऐसे उपायों के बिना नहीं हो सकता, जो आर्थिक दृष्टि से अपर्याप्त और अव्यावहारिक प्रतीत होते हैं, पर जो विकासक्रम में अपनी सीमा को लांघ जाते हैं, पुरानी सामाजिक व्यवस्था के और अधिक अतिक्रमण को अनिवार्य बना देते हैं और उत्पादन प्रणाली में पूर्णतया क्रांति लाने के साधन के रूप में अनिवार्य हैं।

निस्संदेह, भिन्न-भिन्न देशों में ये उपाय भिन्न-भिन्न होंगे।

फिर भी नीचे दिये हुए तरीके सबसे आगे बढ़े हुए देशों में आम तौर से लागू हो सकेंगे:

१. भूसंपत्ति का उन्मूलन और समस्त किराया ज़मीन का सार्वजनिक प्रयोजन के लिए उपयोग।
२. भारी आरोही अथवा क्रमवर्धी आय-कर।
३. विरासत के समस्त अधिकार का उन्मूलन।
४. सभी उत्प्रवासियों और विद्रोहियों की संपत्ति की ज़ब्ती।
५. सरकारी पूंजी और पूर्ण एकाधिकार से संपन्न राष्ट्रीय बैंक द्वारा उधार का राज्य के हाथों में केंद्रीकरण।
६. संचार तथा परिवहन के साधनों का राज्य के हाथों में केंद्रीकरण।
७. राजकीय कारखानों और उत्पादन के उपकरणों का विस्तार करना; एक आम योजना के अनुसार परती ज़मीन को काश्त में लाना और ज़मीन का सामान्यतः सुधार करना।
८. प्रत्येक के लिए समान श्रम-दायित्व, औद्योगिक सेनाओं की स्थापना, विशेषकर कृषि के लिए।
९. कृषि का उद्योग के साथ संयोजन; देश में आबादी के अधिक सम-वितरण द्वारा शहर और देहात के बिच अंतर को धीरे-धीरे मिटाया जाना।
१०. सभी बच्चों की सार्वजनिक विद्यालयों में मुफ्त शिक्षा। अपने वर्तमान रूप में कारखानों में बच्चों के काम का अंत। शिक्षा और औद्योगिक उत्पादन का संयोजन, आदि, आदि।

विकासक्रम में जब वर्ग विभेद मिट जायेंगे और सारा उत्पादन पूरे राष्ट्र के एक विशाल संघ के हाथ में संकेंद्रित हो जायेगा, तब सार्वजनिक सत्ता अपना राजनीतिक स्वरूप खो देगी। राजनीतिक सत्ता, इस शब्द के असली अर्थ में, केवल एक वर्ग की दूसरे वर्ग का उत्पीड़न करने की संगठित शक्ति का नाम है। बुर्जुआ वर्ग के खिलाफ़ अपने संघर्ष के दौरान परिस्थितियों से मजबूर होकर सर्वहारा को अगर अपने को एक वर्ग के रूप में संगठित करना पड़ता है, अगर क्रांति के ज़रिये वह अपने को शासक वर्ग बना लेता है, और इस तरह पुरानी उत्पादन अवस्थाओं का बलपूर्वक अंग कर देता है, तो उन अवस्थाओं के साथ-साथ वह वर्ग विग्रहों के अस्तित्व की और आम तौर पर खुद वर्गों के अस्तित्व की अवस्थाओं का खात्मा कर देगा और, इस प्रकार, वह एक वर्ग के रूप में स्वयं अपने प्रभुत्व का भी अंत कर देगा।

तब वर्गों और वर्ग विग्रहों से बिंधे पुराने बुर्जुआ समाज के स्थान पर एक ऐसे संघ की स्थापना होगी, जिसमें व्यष्टि का स्वतंत्र विकास समष्टि के स्वतंत्र की शर्त होगा।

---

---

\* बुर्जुआ से मतलब आधुनिक पूंजीपति वर्ग से, अर्थात् सामाजिक उत्पादन के साधनों के स्वामियों, उजरती श्रम का उपयोग करनेवालों से है।

सर्वहारा से मतलब आधुनिक उजरती मज़दूरों से है, जिनके पास उत्पादन का स्वयं अपना कोई साधन नहीं होता, इसलिए जो जीवित रहने के लिए अपनी श्रम-शक्ति बेचने को विवश होते हैं। [१८८८ के अंग्रेज़ी संस्करण में एंगेल्स की टिप्पणी।]

२. अर्थात् समस्त लिपिबद्ध इतिहास। १८४७ में समाज का पूर्व-इतिहास, अर्थात् लिखित इतिहास के पहले का सामाजिक संगठन, सर्वथा अज्ञात था। उसके बाद हैक्सटहाउज़ेन (August von Haxthausen) ने रूस में भूमि के सामुदायिक स्वामित्व का पता लगाया; मोरेर ने सिद्ध किया कि यही वह सामाजिक आधार था, जिससे सभी ट्यूटन जातियों ने इतिहास में पदार्पण किया, और धीरे-धीरे यह प्रकट हुआ कि ग्राम-समुदाय ही भारत से लेकर आयरलैंड तक हर जगह समाज का आदि रूप था या रहा होगा। इस आदिम कम्युनिस्ट समाज के आंतरिक संगठन का अपने ठेठ रूप में स्पष्टीकरण मोर्गन की गोत्र के असली स्वरूप और क़बीले के साथ उसके वास्तविक संबंध की महती खोज द्वारा किया गया। इस आदिम समुदाय के विघटन के साथ समाज अलग-अलग और अंततः विरोधी वर्गों में विभेदित होने लगता है। मैंने अपनी पुस्तक *The Origin of the Family, Private Property, and the State*, second edition, Stuttgart, 1886 में इन ग्राम-समुदायों के विघटन की प्रक्रिया पर नज़र दौड़ाने की कोशिश की है। [१८८८ के अंग्रेज़ी संस्करण में एंगेल्स की टिप्पणी।]

३. गिल्ड-मास्टर से मतलब गिल्ड के अध्यक्ष से नहीं, उसके पूर्ण अधिकारप्राप्त सदस्य से है, जिसे गिल्ड के भीतर मास्टर का स्थान प्राप्त था। [१८८८ के अंग्रेज़ी संस्करण में एगेल्स की टिप्पणी।]

४. इटली और फ़्रांस के नगरवासियों ने अपने नगर समुदायों को, सामंती प्रभुओं से स्वशासन के अपने प्रारंभिक अधिकारों को ख़रीद लेने या छीन लेने के बाद, यही नाम दिया था। [१८९० के जर्मन संस्करण में एगेल्स की टिप्पणी।]

फ़्रांस में नवोदित नगरों ने अपने सामंती प्रभुओं और मालिकों से स्थानीय स्वशासन और "तृतीय श्रेणी" के रूप में राजनीतिक अधिकार जीतने के भी पहले "कम्यून" का नाम ग्रहण कर लिया था। यहां, सामान्यतया, बुर्जुआ वर्ग के आर्थिक विकास के संबंध में इंग्लैंड को और राजनीतिक विकास के संबंध में फ़्रांस को लाक्षणिक देश माना गया है। [१८८८ के अंग्रेज़ी संस्करण में एगेल्स की टिप्पणी।]